Approved by Ex. UGC
Journal No. : 63580
Regd. No. 21747

Indexed by : IIJIF, I2OR, SJIF
I2OR Impact Factor : 7.465
ISSN 2277-2014

Research Discourse

An International Peer-reviewed Refereed Research Journal

Vol.XIII **No.I** **Supplement 2023**

Editor in Chief
Anish Kumar Verma

Associate Editors
Rakesh Kumar Maurya
Poornima R
Romee Maurya

Published by :
South Asia Research & Development Institute
B. 28/70, Manas Mandir, Durgakund, Varanasi-221005, U.P. (INDIA)
Website : www.researchdiscourse.org
E-mail : researchdiscourse2012@gmail.com
Mobile : 09453025847, 8840080928

Research Discourse (ISSN 2277-2014) : An International Peer-reviewed Refereed Research Journal. Pub. by : SARDI, Vns, U.P. (INDIA)
Indexed by : IIIF, I2OR, SHI, I2OR Impact Factor : 7.465, Vol. XIII, No. 1, Supplement 2023, Page No. : 8-9

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन

डॉ0 अनुभा शुक्ला*

*असिस्टेण्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह पी.जी. कॉलेज, शिरगामक, जौनपुर, उ0प्र0

सारांश : यह शोध-पत्र माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन को रेखांकित करता है। शिक्षा प्रक्रिया के तीन ध्रुव माने गये हैं– शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम। शिक्षार्थी ही वह केन्द्र बिन्दु होता है, जिसे ध्यान में रखकर शिक्षण प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है। शिक्षार्थी की अपनी व्यक्तिगत तथा सामाजिक समस्यायें होती हैं। यदि व्यक्तिगत तौर पर उसका बुद्धिलब्धि सामान्य है तो शैक्षिक उपलब्धि तदनुरूप होना चाहिये, लेकिन अधिकांशतः ऐसा नहीं होता है। तब हमारा ध्यान उसके सामाजिक विकास या समस्या पर जाता है। सामाजिक विकास के परिणाम स्वरूप बच्चों में सामाजिक योग्यता (Social Intelligence) विकसित होती है, जिसे थार्नडाइक ने सामान्य बुद्धि (General Intelligence) की अपेक्षा अधिक उपयोगी बताया है। सामाजिक बुद्धि का सम्बन्ध लोगों से समन्वय स्थापित करना तथा सम्बन्धों में बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार करने से है। अतः सामाजिक बुद्धि शैक्षिक उपलब्धि से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। इस विषय पर अनेक शोध हुआ है, परन्तु इस विषय पर समुचित स्पष्टीकरण के लिए और अधिक शोध कार्यों की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। इसकी प्रकृति मात्रात्मक है। यह अध्ययन शोधार्थियों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द : सामाजिक बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि, सशक्त, असक्तता, विषाद, अभियोजन आदि।

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है और शिक्षा समाज में चलने वाली एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति के जन्मजात शक्तियों के विकास के साथ उसके ज्ञान, कौशल तथा सामाजिक गुणों का विकास किया जाता है, जिससे वह देश व समाज के लिये एक सशक्त नागरिक बन सके। व्यक्ति सशक्त तभी बन सकता है, जब वह किसी भी परिस्थिति में अपने को अशक्त न अनुभव करे। 'अशक्तता' एक गंभीर समस्या है, जिसे कभी भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। शैक्षिक वातावरण में तो और भी नहीं। यह परिस्थिति तभी उत्पन्न होती है, जब बालक का अपने शैक्षिक वातावरण में पूर्ण अभियोजन नहीं हो पाता। मैस्लो के आवश्यकता पदानुक्रम के अनुसार सामाजिक सुरक्षा तथा स्नेह दूसरी व तीसरी मुख्य आवश्यकता है, जिसका सीधा प्रभाव व्यक्तित्व के विकास पर पड़ता है। समाज में सम्मानित स्थिति प्राप्त करने के लिये समुचित सामाजिक विकास आवश्यक है। बालक के जीवन में यह और भी महत्त्वपूर्ण है। सामाजिक बुद्धि के द्वारा बालक में सामाजिक व्यवहार सम्बन्धित परिपक्वता आती है। नवीन व्यवहारों का विकास, रुचियों में परिवर्तन, मैत्री सम्बन्धों में विस्तार, सामाजिक विकास व सामाजिक बुद्धि से ही संभव है।

समुचित सामाजिक जीवन व्यतीत करने तथा अन्य लोगों के साथ यथोचित व्यवहार करने हेतु सामाजिक बुद्धि आवश्यक है। सामाजिक बुद्धि से आशय सामान्यतः लोगों के साथ समन्वय स्थापित करने, सामाजिक ज्ञान एवं लोगों को समझने से है। शैक्षिक व सामाजिक परिस्थिति में मानव व्यवहार का प्रेक्षण तथा समझने की योग्यता सामाजिक बुद्धि से ही संभव है। सामाजिक बुद्धि में सामाजिक संवेदनशीलता, सामाजिक सूझ तथा सामाजिक संप्रेषण की क्षमता सम्मिलित होती है। इसके अभाव में उपयुक्त शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करना कठिन कार्य है।

शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पहले से ही यह अनुभव किया जाता है कि किसी कक्षा में लगभग एक ही समान IQ वाले छात्रों को शिक्षक समान रीति से सबको पढ़ाता है, लेकिन फिर भी छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में प्रगाढ़ अन्तर दिखायी देता है, ऐसा क्यों है ? अनेक छात्र स्कूल छोड़ देते हैं या स्कूल जाना इसलिए पसंद नहीं करते हैं कि उन्हें अधिक परिश्रम करना पड़ता है। उनका मनोबल कम होता है और वे असफलता के भय से डरे हुए होते हैं। यह समस्या एक चुनौती बनी हुई है। शिक्षा प्रक्रिया के तीन ध्रुव माने गये हैं– शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम। शिक्षार्थी ही वह केन्द्र बिन्दु होता है, जिसे ध्यान में रखकर शिक्षण प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है। शिक्षार्थी की अपनी व्यक्तिगत तथा सामाजिक समस्यायें होती हैं। यदि व्यक्तिगत तौर पर उसकी बुद्धिलब्धि सामान्य है तो शैक्षिक उपलब्धि तदनुरूप होनी चाहिये, लेकिन अधिकांशतः ऐसा नहीं होता है। तब हमारा ध्यान उसके सामाजिक विकास या समस्या पर जाता है। सामाजिक विकास के परिणाम स्वरूप बच्चों में सामाजिक योग्यता (Social Intelligence) विकसित होती है, जिसे थार्नडाइक ने सामान्य बुद्धि (General Intelligence) की अपेक्षा अधिक उपयोगी बताया है। सामाजिक बुद्धि का सम्बन्ध लोगों से समन्वय स्थापित करना तथा सम्बन्धों में बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार करने से है। अतः सामाजिक बुद्धि शैक्षिक उपलब्धि से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। इस विषय पर अनेक शोध हुआ है, परन्तु इस विषय पर समुचित स्पष्टीकरण के लिए और अधिक शोध कार्यों की आवश्यकता है।

अध्ययन का आधार : शिक्षा तभी सार्थक मानी जाती है, जब वह विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल तथा अभियोजन की क्षमता का विकास करे। एक शैक्षिक परिस्थिति व प्रविधि के होते हुए भी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व अभियोजन समान नहीं होता। आकांक्षा के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि नहीं प्राप्त करने पर विद्यार्थियों पर अभिभावक तथा शिक्षक द्वारा दबाव दिया जाता है, जिससे उनका जीवन से सन्तुलन बिगड़ने लगता है और वे विषादग्रस्त (Depressed) हो जाते हैं। इस तरह का परिणाम देखने पर शोधार्थी ने यह पता लगाना आवश्यक समझा है कि कहीं इसका सम्बन्ध सामाजिक बुद्धि से तो नहीं है ? यदि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का सामाजिक विकास उपयुक्त तरीके से होता है तो संभव है, उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी उत्साहित करने वाली हो।

शोध के प्रश्न : इस अध्ययन के आधार पर शोधार्थी ने इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने का प्रयास किया है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सम्बन्ध है या नहीं।

परिकल्पना : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।

शोध विधि प्रस्तुत शोध के लिये वर्णनात्मक अनुसन्धान के सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या इस शोध के लिये उच्च माध्यमिक स्तर के लिये अध्ययनरत विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है।

प्रतिदर्श इस शोध अध्ययन में प्रतिदर्श का चयन यादृच्छिक न्यायदर्शन विधि द्वारा किया गया है। इसमें राजा हरपाल सिंह इंटर कॉलेज, सिंगरामऊ के दो सौ विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

उपकरण

सामाजिक बुद्धि मापनी : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक बुद्धि को मापने के लिये डॉ. एस. माथुर द्वारा निर्मित 'सामाजिक बुद्धि मापनी' का प्रयोग किया गया है। इस मापनी में निम्न आयामों को ध्यान में रखा गया है–

1. सामाजिक समायोजन,
2. सामाजिक दक्षता,
3. सामाजिक नेतृत्व क्षमता।

इसमें प्रयुक्त उपकरण की वैधता गुणांक 0.78 तथा विश्वसनीयता गुणांक 0.87 है। इस परीक्षण में 80 से ऊपर प्राप्तांक पाने वाले उच्च सामाजिक बुद्धि के तथा 50 से कम प्राप्तांक पाने वाले निम्न सामाजिक बुद्धि के अन्तर्गत आते हैं। इस मापनी में 50 कथन है, जिसमे 25 धनात्मक तथा 25 ऋणात्मक कथन हैं। धनात्मक कथन उच्च सामाजिक बुद्धि को प्रदर्शित करते हैं तथा ऋणात्मक कथन निम्न सामाजिक बुद्धि को प्रदर्शित करते हैं। शैक्षिक उपलब्धि के लिए नौवीं तथा दसवीं कक्षा के प्राप्तांकों का प्रतिशत लिया गया है।

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण : प्रस्तुत शोध में शोध प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिये क्रान्तिक अनुपात (CR) परीक्षण का प्रयोग किया गया है, जिसका सूत्र है–

$$\frac{M_1 - M_2}{\sigma D}$$

शोधार्थी द्वारा संकलित प्रदत्त का आकार बड़ा होने के कारण इसका प्रयोग सर्वथा उपयुक्त है।

व्याख्या तथा विश्लेषण : उक्त उपकरण की सहायता से प्राप्त आंकड़ों को उपयुक्त तालिका बनाकर सूत्र की सहायता से हल किया गया है, जो निम्न तालिका में अंकित है।

तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
सामाजिक बुद्धि	200	57.76	3.95	0.341	17.27	0.01
शैक्षिक उपलब्धि	200	63.65	2.78			

Df (198).01 = 2.60

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 57.76 तथा 3.95 है जबकि विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 63.65 तथा मानक विचलन 2.78 है, इनका मानक त्रुटि 0.3421 तथा CR 17.27 प्राप्त हुआ है, जो df(198) के .01 सार्थकता स्तर पर मान 2.60 से अधिक है, जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना निरस्त हो जाती है और यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध है, इस दृष्टि से निष्कर्ष निकलता है कि यदि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का विकास उत्तम है तो निश्चित ही उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उत्तम होगी, जो उनके भावी जीवन में अभियोजन के लिये आवश्यक है।

सन्दर्भ :

1. कपिल, एच के. (1995) 'अनुसन्धान विधियाँ', अष्टम संस्करण, हरप्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा।
2. Hurlock E.B. (1984) Child Development, Mcgraw Hill, Delhi
3. Mc Gurk, H. (1992) Childhood Social Development , Mcgraw Hill, Delhi
4. Singh, R.N. (2008), Modern General Psychology, Vinod Pustak Mandir, Agra.
5. Aiken. I.R (2003) Psychological Testing and Assessment, Doston : Allyn and Bacon.